

१- ऊँचे पहाड़ कोलों की झाड़, वालू वमार दुरतर भगवा  
 के से वोहड़ वीराने में, चल पड़े आप वीर भगवा  
 है आप तपस्वी यती मेरी, मा जोई क्षत्री वीर है।  
 या भूले भरके आ निकले, जाते कौन क हाँ के है।  
 मुखड़ा पर तेज अलों किन है, अदभुत प्रकाश है सौंप  
 मा जोई देवी शक्ति है, जो डाल के रहे है आँखों पर  
 है पश्चिम आप और हम दोनों, यो ही मंजिल कर जायेगी  
 मोद पीरचम हो गी आपस में, तो खुब अच्छी तरह पटजमेगी  
 मानव शरीर के नाते हम, इतना आप से पूँछते हैं।  
 देखा है हमने तुम्हें कही कुछ सोचो सोचो है भूलें है।

को जग कारण तारण भवति, मंजन ह्यरणी मार  
 कि तुम अखिल भुवन पति, लोह मनुज अवतार

करुणा! - बोलें आप चार वीर जंगल की हुगोया  
 नगोया अपनी हमें। कहे  
 श्यामल गौर भेद में दोनों क्षत्रिय शायनामे  
 जंगल की इस कठिन भूमि में फिरते चार-२  
 करके कृपावतों आप हों रक्ताया नगोया अपनी हमें  
 यह सुकुमार शरीर आपके और ही सुदुर्लभ लार  
 मानन की वधा गर्भी, सशे मे लस न रवार  
 कोह सुखा रहे हो, अपनी आप ठहरिया नगोया अपनी हमें  
 ब्रह्मा, विष्णु, महेश त्रिदेवों में से मा जोई  
 अमिता नर नारायण हो मा, अन्य देव हो कोई  
 हमें बताव भइया, आप सभा की प्रवीया नगोया अपनी  
 जग कता पालन संभूता, हरण हेतु मोहभार  
 कि तुम अखिल विश्वपति होकर, चार मनुज अवतार  
 पार करते आए हो, शम्भु की नवीया, नगोया अपनी

२ - नाथ शैल पर कपि चार रहते, सो सुशील दास हम भइ  
 तेहि शान नाथ मयत्री कीजें, दीन जानि मोहि उभय करीजें  
 सो स्वीर कर वीर कर रहि, जँह तह मयकर माहि पठहि



3- महाराज आप तो बारबो राज आनन्द राज कहते हैं।  
अभितो की भी खबर है जो वन में आ रहे भरते हैं।  
है राजनीति के चार अंग, यह आप भी जानते हैं।  
है शाम काम और द-5 भेद, यह अच्छे तरह जानते  
हैं चारों में से रघुनाथ, दो सत्य दिखाये हैं  
प्रथम आपसे सुलह करे, वालि का राज्य दिलोये है।

चौथी दण्ड की बातें उनपुत्रों को लोके आमादा।  
है दण्ड देने के लिए, अंग है समस्त लड़कादा।।  
(लक्ष्मण से माफी मांगना)

4- हे जायवन्त वमा कहते हो, जाकर समुद्र पर गरजु मे  
पहले रावण को मारूँ, मा लंका उल्टी कर दूँ मे  
इस खारी जल को नारीको, लाँघू या अभी लील जाऊँ  
जिस पहाड़ पर लंका है, कहो उसकी भुवने हिला जाऊँ  
कहो सिया ले आऊँ, जा कर सन्देश कहूँ  
रावण समेत लाऊँ, वेग सिख दीजिए  
कहो तो क्षुद्र को, कटुग्व लौ समुद्र बोरूँ  
लाऊँ मन्दोदरी को नैम सुख किमिर  
कहो दस क्षीय भुजवसिन के खेरू आगे  
कहो जाय घेर उठ, आर आयसु दिजिए  
रुद्र हनुमान को विषय निःशंक जाये दीजे साथ  
कहो तो उठाय गद लंक लूर लिजिए

(विभीषण से) तुम्हें मित्रियोगी।  
5- रघुनन्दन वड़े दयालु हैं, वे अवश्य मर लगामें में  
जब शरण में आके जावेंगे तो, वे अपना तुम्हें बनायेंगे।  
महारीले सदा से उनकी है, दोनो में जीति लगाते हो  
जो शरण में आके जावेंगे, उसका संकर करते हैं

6- धन्य विभीषण धन्य तुम धन्य तुम्हारा प्रेम  
धन्य तुम्हारी शीलता, धन्य तुम्हारा नेत्र  
जो सज्जन है सत सांगी है। वे नहीं छिपाये छिपे हैं  
बस रक्त राह में रो रही, इस तरह मिलाए मिलते हैं।  
तुम आज हमारे मार डूँ, अब तुमसे हमें फरक हो गया  
सब सच्चा हाल बता रहा हूँ। अब तलम गुप्त जो रखे



ब्राह्मण रूप में घोड़ा है, मैं हुनमान रखवाना हूँ  
सीला सुधि लेने आया हूँ; श्री राम-चन्द का सेनक हूँ।

(कह रहा)

हृदय अमोघा नगरी में नृप दशरथ ब्रह्मा  
कहानी भगवान की सुनो।

चौथे पुत्र मैं राजा दशरथ, चार पुत्र थे पार  
उनकी आज्ञा सिरोधार्य कर राम-चन्द वन आर  
संग मैं चले लक्षण जो और मिमा महारानी  
कहानी भगवान की सुनो।

राम लक्ष्मण और जानकी जब पंचवटी में आये  
तभी वहाँ पर सुपरिखाने आकर राक्षस सुनोष  
प्यारे आप बना लो भुझको अपनी रानी  
कहानी भगवान की सुनो।

लक्षणलाल तब कोपित होकर, नाक मान विन किन्हे  
मह सुनकर खरदूषण विषवा, निश्चर संग में लीही  
प्रभु के सर से प्राण गवाये, सब अग्नि भानी (कहानी भगवान)

लिये संग भारीच कपट सुग, राखण पहुँचा जाइ  
भातु जानकी को हथै हित, उसने छार लगाइ  
कहा कि भिक्षा दे दो, भुझको हे महारानी (कहानी भगवान)

भिक्षा देते समय दुष्ट ने हथसिमा माल को  
उहे खोजे हिा कपीस ने भोजा है कपी दल को  
सभी दिशाक्षी में धार है कपी विज्ञानी (कहानी भगवान)

छौरा का इक दूत राम का हुनमत लंका आया  
हुआ कृतार्थ आज यह सेवक मैं का दर्शन पूया  
सुन लो माला (शास्त्री की यह राम कहानी  
कहानी भगवान की सुनो)

(मेधनाकर)

अगर तेरा कुछ नुकसान किया, तो अपने काप में बुलवाले  
लपेटे खड़ा-2 मुँह तकता है, शास्त्री को अपने चमकाले  
फिर मेरा तेरा संग्राम ही क्या, मैं तुझको खेल दिखाला हूँ।  
हूँ इन्द्रजित कहलाता है, मैं राम कर कहलाता हूँ।



तुं दीपक लेकर चलता है, मैं रामरूप उजियाला हूँ  
तुं इंदजीर छलवाला है, मैं काम जोरने वाला हूँ  
जो ने वाला  
रविवर से

8

साचिदानन्द सार्वानन्द, श्री रामचन्द सुखकन्द है जो  
रघुनन्दन रघुवर राघवेन्द्र आनन्दकन्द सुखसिन्धु है जो  
जो दशरथ अजित बिहारी है, कहलोट है रघुकुल भूषण  
रिझी श्री, जिन पर सुनिखा, बाँधे है जिनको खर दूषण  
फिर और माद कर लो, जिनकी नारी हर ला र हो  
मैं उन्ही राम का सेवक हूँ, जिनसे पुमवेर बहर हो  
मैं आया था इस लोका में सीला का पत्ता लगाने में  
इतने में मुझको भूख लगी, जो ललचा कुछ फल खाने को  
मेहमान को अपने खतर न ली, वर्या खुब पुम्बकी सराफा है  
फल खाकर पेड़ तोड़ते हैं वानरो को मही आरत है  
स्वामी भोजन करते हैं तो दास प्रसादी पाते हैं  
इस कारण भोजन के पहले, भगवान का भोग लगाते हैं  
मैं भी रागा अर्पण करके, आ वृक्षी से फल खाये हैं  
अधिकार न छोड़ प्रसादी का इस कारण से कतरार हो  
श्री गान जरा कुछ सोचो तो सबको अपना तन थारा है  
निश्चय ने मुझको भाग है, तो मैं भी आपको भाग है

9

तुं जो मुझको जलम कहा, खान नहीं कुछ छलता है  
मिलनी ही केवले खाक कोरि दूर तक नहीं पहुँचता है

आये बल्लु के दिन समीप, इससे तू हठियाम गया  
कहा मेह लेकर हुआ, तू सचमुच में बीताम गया  
धरा-धरा जो कहा है, सो कुछ भी हाँथ न जायेगा  
तू मुदगी बाँध आया है, हाँथ पसार जायेगा।

10

10

(श्री राम के पास पहुँच जा) शन्देर कहा  
दो चार दिन की मर मौ हलर मुझको तो बहुत ख  
उ सौल माँ की व्यष्टी-2 वधो की नाइ कहती है  
हम वृक्षी जो पहाड़ी से, रावण का दुग ठहराये



पल भर में दुर्ग कपार तोड़ लेंगे में प्रलय मचा देंगे  
जब शम गहल भी तोड़ें, तब शवण ध्वरा येगा  
वह सीला को दे जायेगा, या खुद मुझ को आयेगा।

11

(शक्ति लगने पर)

आयसु जो पाक तो सागर में गे जाऊ नथ, गति के समुद्र को आयात मुझ  
कद कर जाउ गति चढ़ाई ले आऊ पी चुरकी खाइ अभी असुर  
हपकाउय

शेष को पकड़ भी पैर बाँड़ि इस को आशु हवा लड़ू तोरि की  
के दिवाऊँ मैं। निज तन त्यागूँ लखन में अपेश। करे  
असुर हपकाई कहे लखन को जिलाऊँ मैं

12

आकाश में हो पाताल ही पृथ्वी में हो सागर में हो  
लाकगा उसको दास मछी, चाहे कृष्ण के घर में हो  
वाता को उसका रंग कप किस तरह यहाँ वह आयेगा  
बधुगई यदि सहाई है तो दिन के पहले आयेगा।

सूर्य से

13

हे सूरज इतना ध्यान रहे संकट सक सूर्य वंश पर है।  
तुम्हारे नीचे राहु द्वारा आधार तुम्हारे सिर पर है।  
इसलिये छिपे रहना भगवन, जब तक न दवा पहुँचा दूँ मैं  
उस समय उदय होना भगवन, दुख को निशा मिटा दूँ मैं  
यदि मेरी सेवा के पहले क्रिणों का चगत्कार होगा  
तो सूर्य वंश सूर्य देव आत्म ज्वर आचकार होगा  
आशा है मेरी प्रार्थना यह, दिल से स्वीकार करेगे  
अतुरंगी कर्तृत्ववाला के साथ निषादेगे  
अन्यथा क्षमा रखना भगवन अजनी तनय से पाला है  
वचन से ही जानते हो, हनुमत कितना मतवाला है।  
मुख में तुम को धर रखने का फिरो आजबेबी पालन होगा  
लखन के ऊपर के पहले तुम्हें शरणापत्तरहना होगा।



१- साथियों। वड़े हो दुख की वार है कि कपिशन सुश्रीव काया की गइ  
अवधि कीर गइ किन्तु जानकीजी सुचि न हो गिल सके

२- राजकुमारजी! हम सीताजी की सुधि लिखे बिना वापस न हो  
जातेगे। आप धवराइये न हो और श्री रामचन्द्रजी अनुग्रह न हो  
समझिये वे साक्षर कह रहे हों उनकी सेवा करने का भी भाग्य  
वड़े भाग्य से हो मिला है वे अपनी इच्छा से हो ब्रह्म और गण  
के लिये उकार धारण में हुये हैं।

३- और वह चयन है जरायु जिसने श्री रामचन्द्रजी के काम के  
लिये अपने प्राण गवाँ दिये। कहाँ वह और कहाँ उसी की जाह  
काम है जो कि भगवान के सेवकों को स्वाने के लिये उद्यत हो

४- साक्षर परब्रह्म परमात्मा अवतार लेकर अयोध्या नरेश रक्षा  
के महाँ प्रगट हुये हैं वे नरलाला करे हेतु वन में आए हैं।  
महाँ उनके पत्नी को किसी ने छु लिया, उन्ही को छुड़ो  
के लिये जरायु ने उनसे कुछ कहे अपने प्राण गवाँ दिये  
किन्तु सीता माता को छुड़ाने सक्ता, उन्ही की स्वेज में  
यहाँ तक आये हैं।

५- प्रसन्न से वारी-२ पार जाने के लिये आकाश वल प्रह्ला  
वाता। आप कितनी मौजान तक जा सकते हैं।  
साथ के वरा देने पर। पुनः

६- वारी इस प्रकार आप लोगो से तो काम नहीं हो पायेगा मे  
धुन ही पुनः है मेरे शरीर में पहले वाला बल बिल्कुल  
नहीं रह गया है जिस समय भगवान वामन रूप धारण  
किये थे उस समय में जवान था

७- वलि वाँधत प्रभु वादेउ से तन वरनि न जाइ  
उभय पर मँह दो-ही, सात प्रदक्षिण भाइ  
इस प्रकार केवल दो पक्षी में हथेली की सात परिक्रमा  
किया गया था, लेकिन अब वृद्धावस्था आने के कारण  
असमर्थ हैं।



५- अंगद जी आप सब कुछ करने लायक हैं लेकिन आप हमारे  
मुकाबले हैं आपको कैसे भेज सकता हूँ। वंजरी

पुनः

वंजरी गवली आप को क्यों भोजन चलाए बिना डूबे हैं आप को वल  
आपने पिता के समान हैं और भगवान राम चन्द्र के काम के लिये  
आपका जन्म हो चुका है।

8) कविता

श्री  
१६

१३  
१४  
१५  
१६  
१७  
१८  
१९  
२०  
२१  
२२  
२३  
२४  
२५  
२६  
२७  
२८  
२९  
३०  
३१  
३२  
३३  
३४  
३५  
३६  
३७  
३८  
३९  
४०  
४१  
४२  
४३  
४४  
४५  
४६  
४७  
४८  
४९  
५०  
५१  
५२  
५३  
५४  
५५  
५६  
५७  
५८  
५९  
६०  
६१  
६२  
६३  
६४  
६५  
६६  
६७  
६८  
६९  
७०  
७१  
७२  
७३  
७४  
७५  
७६  
७७  
७८  
७९  
८०  
८१  
८२  
८३  
८४  
८५  
८६  
८७  
८८  
८९  
९०  
९१  
९२  
९३  
९४  
९५  
९६  
९७  
९८  
९९  
१००

च-य-च-य-च-य तुम प्रवन कुमार च-य  
वीर हनुमान वल तोड़ें आप्रमान हैं।  
तुम कहें अंगम कहुना हो है जहान मध्य  
प्रवन के समान लीव तेज हूँ महान है।  
चरण कमल वन्दे महाराज रामजी के  
हो य के प्रसन लाव कर हूँ प्रमान है  
और कुछ करने को आवहि समय नाहि  
देख सीस मातु केवल आओ महान है

वंजरी गवली के जाने से, मुझको तो बहुत सुभीता है  
पर दूसरी बार ये जाते हैं, वस मह ही एक फजिल है  
शवण अवध मह समझेगा, सब दारों मदार इसी पर है  
हर बार इसी को भेजते हैं, वंश मह ही एक दिलावर है  
जो कुछ भी आज मैं करता हूँ, वह जाहिस् खासो आकर है  
इस बार भेजिए अंगद को, यह भी तो योग्य हूँ काम के है

महाराज इस प्रकार चिन्ता से व्यकुल होकर बेहोश से काम  
नहीं चलेगा लंका में सुघेन नाम का एक वैद्य रहता है  
हनुमान जी उसकी जाका लिवा करें, वंशें कुछ उपाय  
बतायेगा।



आवृत्ति  
वाल के धृष्ट ५२

36

- १- महाराज आपके दोनों भाइयों के प्रेम व प्रताप से सारी राज्य में शान्ति रक्षित है। सारी पूजा सार्वी रूपे समृद्ध है। सर्वत्र आप दोनों भाइयों के प्रेम को चर्चा है कि भाई हो लो महाराज वालि रूप सुशेष जैसा
- २- और महाराज आपको अकेले बड़े सरकार कहाँ रह गये
- ३- ये लो आपने बहुत ही दुःखद समाचार सुनाया, महाराज वालि जैसे प्रतापी राजा इस विक्रिन्धा राज्य को मिलना बहुत ही दुर्लभ है। किन्तु बिना राजा के राज्य को शोभा नहीं हो है। राज्य को खचलाने के लिये किसी राजा का होना अत्यन्त आवश्यक है कल। आप को निवेदन है कि आप इस राज्य विहासन पर इस राज्य का उत्तर दायित्व सम्भालें।
- ४- जहाँ, नहीं सुखे होते सरकार आपको यह इस राजगद्दी पर बैठा हो हो जा, अन्यथा राज्य का क अकवर्धित हो जायेगा, और राज्य की भलाई को देखते हुये, इस विहासन पर मैं आपको पदाब्ज कला है।





हनुमान जी को उनके बच का स्मरण दिवाने हेतु

पवन तम्य काटे चुप बैठे हो - पवन के सम पुरुषार्थ

①

छयाव करो अपने बच का तुम - बजरंगी निजनेम उधारो ॥

प्राण का संकट समुपास्थित है -

हम सबपर है कष्ट अपारो ॥

को नहीं जानत है जग में कपि -

संस्त मोचन नाम तुम्हारो ॥

② बाबि की भास कपीश बसे गिरी -

जात महा प्रभु पंथ निहारो ॥

चौकि महाभुते श्राप दियो शव -

चाहिम कौन विचार विचारो ॥

कैदिय रूप लैवाय महा प्रभु -

तुम ही कपीश को प्राण उबारो ॥

को नहीं जानत है जग में

③ सीयाकि खोज में श्राते समय ही -

कपीस ने थे यह बें उचारो ॥

जीवत ना बचि है हमसो जो -

बिना सुधि लाए रहा पग धारो ॥

शवध व्यथित हुई शव सबको -

प्राण का संकट आयो है भारो ॥

को नहीं जानत है जग में कपि संस्त मोचन

④ कोई भी कार्य काठिन जग में नाहि -

जो तुम पूरा न कर सको पारो ॥

बुद्धि और विवेक तथा विज्ञान कि -

निधि है हनुमत पास तुम्हारो ॥

राम के काल के याद करो उसके लिये है

शवतार तुम्हारो को नहीं जानत है



(5). काज के बडि देवन के तुम —

वैर महा नभु दोखि विचारो ॥

कौन से संकट है कपि सेन का —

जो तुमसे नहीं जात है तारो ॥

जहि के लेक बियाय सिया सुधि

हम सबका ज्ञान उबारो को नहि जानि

हनुमान जी के लुहने पर

राधेश्याम

बेजरगी इतना ही करो तुम लेका जाकर सिय सुधि ला

चलकर नभु पास उ-ही से सिला माँ की टमघासना

तब कैलुक बस कपि सेना संग श्री रघुनाथजी के

चलेंगे ।

निस्सालरो का विनाश करके रावण का वध स्वयं करो

स्वयं जानकी को लाकर वे अपना यस फैलायेगे ।

उनके इस पावन यस को मुनि नारदजी सब गाये